PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

अनुमान (नव्य न्याय)

Dr. S. K. Singh
Mob. - 9431449951

→ नव्य न्याय के प्रणेता गंगेश उपाध्याय ने अपने ख्यातिलब्ध ग्रंथ तत्त्वचिन्तामणि में अनुमान का लक्षण स्पष्ट करते हुये कहा है - 'व्याप्ति विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान से उत्पन्न होनेवाले ज्ञान को अनुमिति तथा अनुमिति के कारण को अनुमान कहते है। अनुमान लिंग विषयक परामर्श है, ~~परामर्श~~ परामृश्यमान (परामर्श देनेवाला) लिंग नहीं।

→ तर्कशास्त्र के प्रणेता केशव मिश्र के अनुसार लिंग परामर्श को अनुमान माना जाता है। पुनः, लिंग तथा परामर्श को परिभाषित करते हुये कहा गया है कि व्याप्ति के बल पर जो अर्थ का ~~बो~~ बोधक होता है, उसे लिंग कहते हैं, जैसे - धूम अग्नि का लिंग है। पुनः 'जहाँ धूम्र है, वहाँ अग्नि है' - इस प्रकार के साहचर्य नियम को व्याप्ति कहते हैं। 'धूम्र' या लिंग का तृतीय ज्ञान 'परामर्श' है।

धूमरूपी लिंग के तीनों ज्ञानों की व्याख्या करते हुये कहा गया है कि महानस (पाकशाला) में अग्नि के व्याप्य

भूयो-भूयः (बार-बार) सहचार दर्शन से

वह्नि वह्निव्याप्तो धूम – इस आकार का वह्नि (आग) के व्याप्य रूप में धूम्र का जो ज्ञान होता है उस धूम्र का प्रथम ज्ञान समझना चाहिये। अर्थात जितनी बार देखने से उक्त व्याप्ति का निश्चय होता है उन सभी दर्शनों को लिंग का प्रथम दर्शन या प्रथम ज्ञान समझना चाहिये।

लिंग का प्रथम ज्ञान होने के पश्चात दूर से पर्वत आदि पर धूम्र रूप लिंग का जो दर्शन होता है वह लिंग का द्वितीय ज्ञान है।

लिंग के इस द्वितीय ज्ञान से लिंग के प्रथम ज्ञान द्वारा उत्पन्न किये गये व्याप्ति विषयक संस्कार का उद्बोधन (जागरण) होता है। इस कारण 'धूमो वह्निव्याप्तः' इस आकार में व्याप्ति स्मरण होता है। ~~अनन्तर~~ इस स्मरण के अनन्तर 'वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वतः' – इस आकार में पर्वत के साथ वह्नि व्याप्त धूम के संबंध का जो ज्ञान होता है, उसे लिंग का तृतीय ज्ञान कहते हैं। लिंग का यह तृतीय ज्ञान ही परामर्श है जो अनुमिति की उत्पत्ति में करण बनता है।

इस प्रकार तृतीय ज्ञान अथवा लिंग परामर्श की उत्पत्ति के तत्काल पश्चात अनुमिति होती है।

तर्कसंग्रह के रचयिता अन्नम्भट्ट ने भी परामर्श से उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति तथा उसके करण को अनुमान कहा है।

Scanned with CamScanner